संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2082 | वर्ष : 2025

हिन्दी मासिक

अंक : जुलाई (द्वितीय)

चोल कौन थे?

आदि तिरुवथिरई महोत्सव का उद्देश्य

उत्तर–दक्षिण भारत को एक करने वाले चोल राजाओं का भारत बोध

पूसा विश्वविद्यालय में गत 20 वर्षों से बिना जुताई के हो रही खेती

गत 17 जुलाई को केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान पूसा स्थित डॉ राजेंद्र प्रसाद कृषि अनुसंधान केंद्र के दीक्षांत समारोह में आए थे। यहां जब उन्हें बताया गया कि परिसर के एक जमीन पर गत 20 वर्षों से बिना जुताई के खेती हो रही है, तो वह स्तब्ध रह गए।

यहाँ सीधे मशीन से बुआई होती है। यहां की मिट्टी में जीवित केंचुए मिलते हैं जो इसे उपजाऊ और जिंदा बनाए रखते हैं। इस रीजनरेटिव एग्रीकल्चर से खेत की सेहत सुधरी, लागत घटी और उत्पादन बढ़ा है। जहाँ औसतन 60–62 क्विंटल उपज होती है, वहीं इस जमीन पर 120 क्विंटल तक फसल मिलती है।

उन्होंने बातचीत में बताया कि यही खेती का भविष्य है – 'कम लागत, ज्यादा लाभ और मिट्टी का संरक्षण।' भारत में कृषि का उत्पादन अभूतपूर्व बढ़ा है, लेकिन विभिन्न राज्यों के फसलों उत्पादन में अंतर हैं। इसके अलावा एक ही राज्य के अलग–अलग जिलों के उत्पादन में भी असमानता है। एक जिले में उत्पादन ज्यादा है तो दूसरे जिले में कम।

देश में कम उत्पादकता वाले 100 जिले की पहचान की गई है जहाँ उत्पादकता कम है, फसल सघनता कम है और KCC के माध्यम से ऋण का प्रवाह कम है। ऐसे जिलों में 100 विभागों की 36 योजनाओं को कन्वर्जेंस से लागू किया जाएगा।

100 जिलों के लिए विशेष कार्य योजना

कन्वर्जेंस से लगभग रु. 24,000 करोड़ का इंतजाम करके उन जिलों की कृषि उत्पादकता को राष्ट्रीय औसत और दुनिया के औसत के बराबर ले जाने का प्रयत्न किया जा रहा हैं। बिहार के जिले भी इस योजना के अंतर्गत हैं।

उन्होंने बिहार के प्रतिभा का सम्मान करते हुए कहा कि अगर परिश्रमी किसान और प्रतिभावान विद्यार्थी चाहिए तो वह भी इसी बिहार की पवित्र धरती पर मिलेगा। यहाँ के नौजवान कल्पनाशील, मस्तिष्क के धनी, कर्मठ, कर्तव्यनिष्ठ और अपार परिश्रम करने वाले हैं। समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, केवल एक विश्वविद्यालय नहीं, बल्कि कृषि शोध की जननी है। यहां देशभर के बच्चे अध्ययन कर रहे हैं। उन्होंने दीक्षांत समारोह में डिग्री प्राप्त की है। कृषि क्षेत्र में ये बच्चे नित्य नए कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सुर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

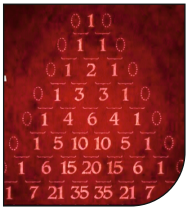

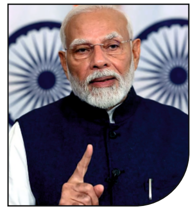

अनुक्रमणिका

जनोपयोगी .... -----
बोध कथा 02
भारतीय ज्ञान 03
संस्था 05
कार्यक्रम 11
जानकारी 13
संकल्प 14
समाचार 15
नमन 16
अपराध .... -----
पहल .... -----

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।
आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।
शेष शुभ!

जीवन में समस्याएँ – सौ ऊँटों की कहानी

राजस्थान के एक सुदूर जिले में एक व्यक्ति रहता था जो हमेशा किसी न किसी समस्या से परेशान रहता था और अपने जीवन से खुश नहीं था। एक दिन उसे पता चला कि एक संत अपने काफिले के साथ उसके शहर आए हैं। उस आदमी ने उन संत के पास जाने का फैसला किया। शाम को वह उनके पास गया और कुछ देर प्रतीक्षा करने के बाद संत से उसकी मुलाकात हुई।

उसने संत से कहा, ष्बाबा, मैं अपने जीवन से बहुत दुखी हूँ। मैं हर समय समस्या से घिरा रहता हूँ। ऑफिस का तनाव, स्वास्थ्य की समस्या, घर की समस्याएँ। कृपया मुझे कोई रास्ता बताएँ जिससे मेरी सारी समस्याएँ समाप्त हो जाए और मैं एक शांतिपूर्ण और सुखी जीवन जी सकूँ।"

संत मुस्कुराए और बोले, ष्बेटा, कल सुबह मैं तुम्हें एक उपाय दूँगा। लेकिन इस बीच क्या तुम मेरा एक छोटा सा काम कर सकते हो?

आदमी मान गया। संत ने आगे कहा, ष्हमारे काफिले में सौ ऊँट हैं। मैं चाहता हूँ कि आज रात तुम उनकी देखभाल करो। जब सभी सौ ऊँट बैठ जाएँ, तो तुम भी सो जाना।ष यह कहकर संत अपने तंबू में चले गए और वह आदमी रात को ऊँटों की देखभाल करने चला गया।

अगली सुबह संत आदमी के पास गए और पूछा, ष्बेटा, क्या कल रात तुम्हें अच्छी नींद आई?ष आदमी उदास हो गया और उसने उत्तर दिया, ष्बाबा, मैं एक पल के लिए भी सो नहीं पाया। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन एक बार में सभी ऊँट एक साथ नहीं बैठ सके। कुछ ऊँट खुद बैठ जाते हैं लेकिन उनमें से कुछ मेरी लाख कोशिश करने पर भी नहीं बैठते और अगर उनमें से एक बैठ भी जाता तो दूसरा ऊँट उठ जाता।ष

संत मुस्कुराए और बोले, ष्अगर मैं गलत नहीं हूँ तो कल रात तुम्हारे साथ शायद यह हुआ थारू–

1. कई ऊँट थे जो रात को खुद बैठे रहे थे।
2. कई ऊँट तुम्हारे प्रयास से बैठ गए।
3. कुछ ऊँट तुम्हारी कोशिश के बाद भी नहीं बैठे। और फिर बाद में तुमने पाया कि कुछ समय के साथ वे खुद ही बैठ गए। आदमी ने जवाब दिया, ष्हाँ! महात्मा जी, बिल्कुल यही हुआ था।ष

संत ने अपनी बात जारी करते हुए आगे कहा, ष्अब क्या कुछ तुम्हारी समझ में आया? हमारे जीवन में समस्याएँ भी कुछ ऐसी ही होती हैं..

1. कुछ अपने आप हल हो जाती हैं।
2. कुछ तुम्हारे प्रयासों से सुलझ जाती हैं।
3. कुछ तुम्हारे प्रयासों से भी नहीं सुलझती। इन समस्याओं को समय पर छोड़ देना चाहिए। वे सही समय पर अपने आप हल हो जाएँगी। पिछली रात तुमने अनुभव किया कि तुम्हारी पूरी कोशिशों के बाद भी, एक ही समय में सभी ऊँट बैठे नहीं मिल सके। तुमने एक ऊँट को बिठाया तो दूसरा ऊँट कहीं और खड़ा हो गया।

उसी तरह यदि तुम एक समस्या का समाधान करते हो तो तुमको वहाँ दूसरी समस्या खड़ी दिखाई देगी। यही जीवन है। समस्याएँ जीवन का हिस्सा हैं, कभी कम तो कभी बहुत अधिक। सुख–दुःख तो केवल भ्रम है।

समस्याएँ जीवन का हिस्सा हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि तुम उनके बारे में सोचते ही रहो। तुम समस्याओं को एक तरफ रख कर आगे बढ़ते रहो बस। जीवन के उद्देश्य (आत्म–साक्षात्कार) की ओर बढ़ना सीखो।

1

1 1

1 2 1

1 3 3 1

1 4 6 4 1

1 5 10 10 5 1

1 6 15 20 15 6 1

1 7 21 35 35 21 7 1

1 8 28 56 70 56 28 8 1

1 9 36 84 126 126 84 36 9 1

1 10 45 120 210 252 210 120 45 10 1

1 11 55 165 330 462 462 330 165 55 11 1

1 12 66 220 495 792 924 792 495 220 66 12 1

1 13 78 286 715 1287 1716 1716 1287 715 286 78 13 1

1 14 91 364 1001 2002 3003 3432 3003 2002 1001 364 91 14 1

1 15 105 455 1365 3003 5005 6435 6435 5005 3003 1365 455 105 15 1

1 16 120 560 1820 4368 8008 11440 12870 11440 8008 4368 1820 560 120 16 1

भारतीय ज्ञान – 'पास्कल त्रिभुज' नहीं, 'मेरु प्रस्तर'!

प्रशांत पोळ

सोलहवीं – सत्रहवीं शताब्दी में यूरोप के विद्वज्जनों को गणित की जो बातें समझ में आई, वह भारतीय गणितज्ञों को हजार – डेढ़ हजार वर्ष पहले से ही ज्ञात थीं।

उदाहरण के लिए – पास्कल त्रिभुज। यह पास्कल त्रिकोण यानी एक बड़े त्रिकोण में बने छोटे–छोटे खानों (बक्सों) की रचना है। इस त्रिकोण में शीर्ष स्थान पर, अर्थात् सबसे ऊपर, 1 से शुरुआत होती है। बाद में त्रिकोण के दोनों बाजुओं में 1 का आंकड़ा अंत तक आता है। बीच की प्रत्येक संख्या, यह उसके ऊपर की दो संख्याओं का जोड़ होती है।

इस त्रिकोण की संख्याओं की विशिष्ट रचना के कारण और उसके जोड़ से होने वाली मजेदार बातों के कारण, यह गणित की एक गूढ़ रचना समझी जाती है। विश्व की सारी गणित की पुस्तकों में इसको खोजने वाले वैज्ञानिक का नाम दिया है – 'ब्लेज पास्कल' (19 जून 1623 – 19 अगस्त 1662)। यह फ्रेंच गणितज्ञ, वैज्ञानिक और दार्शनिक था।

हालांकि इस खोज के हजार दृ बारह सौ वर्ष पहले, पिंगल ऋषि ने, उनके 'छंदशास्त्र' ग्रंथ में, इस जादुई त्रिकोण का विस्तार से वर्णन किया है। ये पिंगल ऋषि, प्रसिद्ध व्याकरणकार पाणिनि के छोटे भाई थे। इनका कार्यकाल ईसा पूर्व 300 से 200 वर्ष का है। अर्थात् आज से बाईस सौ – तेईस सौ वर्ष पहले, एक भारतीय गणितज्ञ ऋषि पिंगल ने, गणित की विभिन्न शाखाओं में उपयोगी ऐसा जादुई त्रिकोण बनाया। बाद के अनेक भारतीय गणितज्ञों ने इसका उपयोग भी किया।

किंतु हम ऐसे अभागे हैं कि सवा दो हजार वर्ष की हमारी उन्नत ज्ञान परंपरा भूल कर, उस त्रिकोण को 'पास्कल त्रिभुज' के नाम से, सर पर रखकर नाच रहे हैं..!

पिंगल ऋषि ने 'मेरु प्रस्तर' नाम से यह त्रिकोण तैयार किया। आगे चलकर अनेक प्रकार के गणित में, अनेक भव्य–दिव्य मंदिरों, विशाल राजप्रासाद आदि के डिजाइन में, नगर नियोजन की रचना में, इस मेरु प्रस्तर का उपयोग होता रहा। विश्व का सबसे बड़ा प्रार्थना स्थल, कंबोडिया का 'अंगकोर वाट' मंदिर भी इसी मेरु प्रस्तर की रचना पर आधारित है।

इन्ही पिंगल ऋषि ने, उनके छंदशास्त्र पुस्तक में 'बाइनरी सिस्टम' का परिचय करवाया है। जी, हां। आज की सारी डिजिटल प्रणाली का आधार, बाइनरी सिस्टम..! 0 और 1, अर्थात लघु और गुरु। किंतु पिंगल ऋषि की बाइनरी सिस्टम में 1 लघु है, तो 0 गुरु। इस प्रणाली के आधार पर पिंगल ऋषि ने 'बाइनरी टू न्यूमेरिकल डिजिट' ऐसी जो रचना हम करते हैं, वैसी रचना करके अक्षर तैयार किए हैं।

कितना अद्भुत है यह..!

पाश्चात्य विश्व में इस बाइनरी संकल्पना को खोज निकाला, वर्ष 1689 में। गाटफ्रेड लिबनीज नाम के वैज्ञानिक ने, इन बाइनरी अंकों की संकल्पना सामने रखी और बाद में उसका आधार लेकर, आज की आधुनिक कंप्यूटर/डिजिटल प्रणाली तैयार हुई।

पर, लगभग बाईस सौ वर्ष पहले, अपने देश में पिंगल ऋषि ने ऐसी ही बाइनरी प्रणाली का प्रयोग किया था, इसका हमें विस्मरण हो गया..!

प्राचीन समय में, अपने देश में महान गणितज्ञों की परंपरा रही है। आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ चौथी शताब्दी में हो गए। सातवीं शताब्दी में भास्कराचार्य, सातवीं सदी में ही ब्रह्मगुप्त, नौवीं सदी में महावीराचार्य, आर्यभट्ट (द्वितीय), दसवीं शताब्दी में श्रीपति, ग्यारहवीं सदी में श्रीधर और भास्कराचार्य (द्वितीय) बारहवीं सदी में। यह सब महत्व के गणितज्ञ हैं। इनके सिवाय, पुरानी गणित की संकल्पनाओं में नया कुछ जोड़ने वाले, पहले के गणितीय सूत्रों पर भाष्य लिखकर उसमें से कुछ नया निकालने वाले– अनेक गणितज्ञ हुए।

इस्लामी आक्रान्ताओं के भारत में आने के बाद यह क्रम टूटा। इन आक्रांताओं ने बड़े–बड़े विश्वविद्यालय तहस–नहस किए, ध्वस्त किए। मात्र गणित ही नहीं, तो विद्या की, ज्ञान की अन्य शाखाओं में हो रहा शोध रुक गया। किंतु ऐसी विषम परिस्थिति में भी कुछ गणितज्ञ अपनी साधना कर ही रहे थे।

वर्ग, वर्गमूल, घनमूल, वृत्त /त्रिकोण /चतुर्भुज का क्षेत्रफल, किसी गोल वस्तु का /सिलैंड्रिकल वस्तु का आयाम, पिरामिड की रचना, उसका आकारमान, गणितीय ६ ज्यामितीय श्रेणी३ ये सारी बातें, आज से डेढ़ – दो हजार वर्ष पूर्व, अपने पूर्वजों को ज्ञात थीं। इन सबका व्यवहार में उपयोग होता था। इसके अतिरिक्त अत्यंत कठिन और जटिल ऐसे ज्यामिति के प्रमेय, त्रिकोणमिति के सूत्र ऐसी अनेक बातें भी अपने पुरखों को अच्छे से आती थीं। तात्कालिक पश्चिमी जगत का विचार किया, तो हम समय से बहुत ज्यादा आगे थे।

भारतीय मजदूर संघ – सत्तर वर्ष की साधना

–सजी नारायणन सी. के

भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी जी प्रायः कहा करते थे कि मजदूर संघ एक "संघ सृष्टि" है – अर्थात यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक रचना है। उन्होंने इस संगठन की स्थापना संघ के द्वितीय सरसंघचालक पूजनीय गुरुजी गोलवलकर के कुशल मार्गदर्शन में की। भारतीय मजदूर संघ का गठन देश के अन्य प्रमुख केंद्रीय श्रमिक संगठनों, जैसे एटक (AITUC), इंटक (INTUC), एचएमएस (HMS), के बाद हुआ, किंतु केवल 34 वर्षों के भीतर ही यह देश का सबसे बड़ा केंद्रीय श्रमिक संगठन बन गया। अपने पूरे सफर में मजदूर संघ ने उन मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया जिन्हें अन्य संघों ने प्रायः नजरअंदाज किया।

मजदूर संघ ने मजदूरों के उचित वेतन और सेवा शर्तों को सुनिश्चित करने में अग्रणी भूमिका निभाई, परंतु इसकी दृष्टि सदैव केवल 'रोटी–कपड़ा' तक सीमित नहीं रही। मजदूर सिर्फ माँगकर्ता नहीं, राष्ट्रनिर्माता भी है। यह संगठन अपनी गहन राष्ट्रवादी पहचान के लिए विशिष्ट रहा है। इसका नारा रहा– "श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण"। मजदूर संघ ने न तो "राजनीतिक ट्रेडयूनियनवाद" को स्वीकार किया और न ही केवल "रोटी–कपड़ा ट्रेडयूनियनवाद" को। मजदूर संघ का दृष्टिकोण यह था कि किसी भी औद्योगिक निर्णय में केवल मजदूर और मालिक ही नहीं, अपितु समाज भी एक तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है।

मजदूर संघ ने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि मजदूरों का श्रम केवल उनकी आजीविका का साधन न होकर, राष्ट्र निर्माण में सार्थक योगदान देने वाला होना चाहिए। इस संतुलित दृष्टिकोण को उसके प्रेरणास्पद नारे में अभिव्यक्त किया गया– "देश के हित में करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम।"

राष्ट्र संकट के समय मजदूर संघ ने बार–बार भारतीय मजदूरों से राष्ट्र सेवा के लिए आगे आने का आह्वान किया। 1962 के चीनी आक्रमण, 1965 और 1971 के भारत–पाक युद्ध तथा बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान मजदूर संघ ने राष्ट्रहित में कार्य करने वाले श्रमिक संगठनों को संगठित कर "राष्ट्रीय मजदूर मोर्चा" का गठन किया और उन विषम परिस्थितियों में सभी प्रकार के विरोध–प्रदर्शनों एवं मांगों को स्थगित कर दिया।

अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति निष्ठावान रहते हुए, मजदूर संघ ने भारतीय दृष्टिकोण पर आधारित श्रमिक आंदोलनों को आगे बढ़ाया। मजदूर संघ 17 सितंबर विश्वकर्मा जयंती को राष्ट्रीय श्रम दिवस के रूप में मनाता है। यह मई दिवस का वैकल्पिक रूप है। मई दिवस उस विफल आंदोलन की याद में मनाया जाता है, जिसने अंततः अमेरिका में श्रमिक आंदोलन को कमजोर किया, जहां यह आंदोलन प्रारंभ हुआ था। इसके विपरीत भारत में ऋषि विश्वकर्मा को श्रमिकों की गरिमा और उनके समाज में पूजनीय स्थान का प्रतीक माना गया है। आज कई राज्य इस दिन को आधिकारिक अवकाश के रूप में मान्यता दे चुके हैं।

श्रम सेवा में ऐतिहासिक योगदान

मजदूर संघ ने अनेक ऐतिहासिक श्रम सुधारों में अग्रणी भूमिका निभाई है। मजदूरों की आर्थिक आकांक्षाओं की पूर्ति में वेतन सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मजदूर संघ ने उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) की गणना में व्याप्त त्रुटियों को सबसे पहले चिन्हित किया, जो महंगाई भत्ते (DA) का आधार होता है। जबकि प्रारंभ में इंटक और एचएमएस जैसे अन्य संघों ने इसका विरोध किया, बाद में उन्होंने भी इसे स्वीकार किया। मजदूर संघ के प्रयासों के फलस्वरूप 20 अगस्त, 1963 को मुंबई बंद सफल रहा, और सरकार ने अंततः लकड़ावाला समिति का गठन किया जो सीपीआई पद्धति की समीक्षा हेतु बनाई गई।

मजदूर संघ ने बोनस को स्थगित वेतन का दर्जा देने की मांग की और "सभी को बोनस" का नारा दिया, जिसे बाद में सभी प्रमुख श्रमिक संगठनों ने अपनाया। 1967 में गठित प्रथम राष्ट्रीय श्रम आयोग के समक्ष मजदूर संघ ने श्रमिकों के कल्याण हेतु एक विस्तृत ज्ञापन प्रस्तुत किया।

मजदूर संघ ने 1971 में घरेलू कामगारों के मुद्दे को उठाया, जो उस समय न तो श्रमिक कानूनों के अंतर्गत आते थे और न ही उन्हें किसी प्रकार की कानूनी सुरक्षा प्राप्त थी। मजदूर संघ ने मुंबई में 'घरेलू कामगार संघ' की स्थापना की। 22–23 मई 1972 को हुए अपने तीसरे राष्ट्रीय अधिवेशन में लगभग 60,000 घरेलू कामगारों की विशाल रैली आयोजित की गई।

1974 में भारतीय रेलवे मजदूर संघ ने राष्ट्रव्यापी रेल हड़ताल में अन्य संघों के साथ अहम भूमिका निभाई। जहां कुछ अन्य संघ इस दौरान राष्ट्रीय संपत्ति को नुकसान पहुँचाने की बात कर रहे थे, वहीं मजदूर संघ ने यह स्पष्ट किया कि संघर्ष राष्ट्रीय संपत्ति को हानि पहुंचाए बिना किया जाएगा, और ऐसा हुआ भी।

दमन के दौर में प्रतिरोध की आवाज

26 जुलाई, 1976 को जब श्रीमती इंदिरा गांधी ने आपातकाल लागू किया, तो उसके विरुद्ध लोक संघर्ष समिति का गठन हुआ। मजदूर संघ, सीटू, एचएमएस और एचएमकेपी ने संयुक्त परिपत्र जारी किया। जब अन्य केंद्रीय श्रमिक संगठनों के नेता तानाशाही के विरुद्ध संघर्ष से पीछे हटने लगे, मजदूर संघ ने सड़कों पर उतरकर विरोध जारी रखा। इसके परिणामस्वरूप मजदूर संघ के 5,000 से अधिक कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया, जिनमें लगभग 111 को कुख्यात मीसा (MISA) कानून के तहत जेल भेजा गया। इस साहसिक प्रतिरोध और बलिदान ने देशभर के श्रमिकों का विश्वास मजदूर संघ में प्रगाढ़ किया और आपातकाल के बाद संगठन का तेजी से विस्तार हुआ।

मजदूर संघ के प्रतिनिधि के रूप में 1977 में दत्तोपंत ठेंगड़ी जी ने अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के जिनेवा सम्मेलन में भाग लिया। 1980 तक कांग्रेस सरकार ने मजदूर संघ को देश का दूसरा सबसे बड़ा केंद्रीय श्रमिक संगठन घोषित कर दिया। इसके पश्चात मजदूर संघ को ILO सहित अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारतीय श्रमिक प्रतिनिधिमंडल में शामिल किया गया। 1989 में कांग्रेस सरकार द्वारा करवाए गए पुनः सत्यापन में मजदूर संघ को देश का सबसे बड़ा केंद्रीय श्रमिक संगठन घोषित किया गया। इसके फलस्वरूप 1990 के दशक से मजदूर संघ को भारतीय प्रतिनिधिमंडलों का नेतृत्व सौंपा जाने लगा।

मजदूर संघ ने सदैव भारत में श्रमिक हितों की रक्षा के लिए श्रमिक संगठनों की एकता को प्राथमिकता दी। 1980 में विश्वकर्मा जयंती (श्रम दिवस) के उपलक्ष्य में मजदूर संघ ने विभिन्न श्रम संगठनों के नेताओं को आमंत्रित किया। 4 जून, 1981 को आठ केंद्रीय श्रमिक संगठनों एवं राष्ट्रीय औद्योगिक महासंघों की भागीदारी से राष्ट्रीय अभियान समिति का गठन हुआ, जिसका उद्देश्य सरकार की श्रमविरोधी नीतियों का विरोध करना था।

दस केंद्रीय श्रमिक संगठनों ने 1986 में राष्ट्रीय एकता, परमाणु निरस्त्रीकरण और नस्लीय भेदभाव जैसे वैश्विक मुद्दों पर साझा मंच तैयार किया। मजदूर संघ ने इस पहल का स्वागत किया और विश्व शांति एवं समरसता के दृष्टिकोण से इन गतिविधियों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई।

एक आर्थिक क्षेत्र में कार्यरत संगठन होने के नाते मजदूर संघ व्यक्ति और राष्ट्र दोनों के आर्थिक विकास को सर्वोपरि मानता है। मजदूर संघ ने भारतीय आर्थिक गतिविधियों में स्वदेशी के विचार को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया। 1984 में हैदराबाद में हुए अपने सातवें राष्ट्रीय अधिवेशन में मजदूर संघ ने "साम्राज्यवाद के विरुद्ध आर्थिक स्वतंत्रता का युद्ध" की घोषणा की।

प्रौद्योगिकी अवश्य हो लेकिन नौकरियों की कीमत पर नहीं कंप्यूटरों के आगमन ने श्रमिकों पर नई तकनीकों के प्रभाव को लेकर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए थे। आज भी, दुनिया इंडस्ट्री 4.0 कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, रोबोटिक्स और अन्य नवाचारों के रोजगार क्षेत्र में हस्तक्षेप के प्रभावों से जूझ रही है। मजदूर संघ का स्पष्ट मत है कि तकनीक और मशीनें मानव श्रमिकों की सहायक होनी चाहिएं, न कि उनका विकल्प, चूंकि भारत एक श्रम–बहुल देश है। मजदूर संघ का मानना है कि तकनीकों को भारतीय परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए, न कि यथावत अपनाया जाए, क्योंकि बिना विवेक के किया गया उपयोग रोजगार को नुकसान पहुँचा सकता है। इसी सिद्धांत के अनुरूप, मजदूर संघ ने 1981 के हैदराबाद अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया कि 1984 को "कंप्यूटरविरोधी वर्ष" के रूप में मनाया जाएगा, उन उपकरणों के विरोध में जो श्रमिकों का स्थान ले सकते थे। हालांकि, मजदूर संघ ने अनुसंधान, रक्षा, मौसम–विज्ञान, समुद्र–विज्ञान जैसे जटिल क्षेत्रों में कंप्यूटरों के उपयोग का विरोध नहीं किया। मजदूर संघ ने कंप्यूटर के रोजगार पर प्रभाव, विशेषतः बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में, पर सभी हितधारकों की भागीदारी के साथ गोलमेज सम्मेलन बुलाने की भी मांग की। चार दशक बाद, दुनिया एक बार फिर एआई और रोबोटिक्स के बढ़ते प्रभाव को लेकर उसी बहस में उलझी हुई है, और वही चिंताएँ और तर्क दोहराए जा रहे हैं।

मजदूर संघ ने विभिन्न सरकारों के प्रति सदैव "उत्तरदायी सहकारिता" (responsive cooperation) की नीति अपनाई है, चाहे वे किसी भी राजनीतिक विचारधारा की हों। इसका अर्थ है कि सरकार का मजदूरों के प्रति व्यवहार ही यह तय करता है कि मजदूर संघ समर्थन देगा या विरोध करेगा। श्रमिक–पक्षीय नीतियों का समर्थन करते हुए मजदूर संघ ने मजदूर–विरोधी सुधारों का सशक्त विरोध किया। संयुक्त ट्रेड यूनियन आंदोलनों का नेतृत्व करते हुए मजदूर संघ ने यह सुनिश्चित किया कि राजनीतिक हित किसी भी

संयुक्त कार्रवाई को दूषित न करें। यही वह बिंदु था जिसने मजदूर संघ को अन्य ट्रेड यूनियनों से अलग किया। हालांकि प्रारंभ में अन्य संघ इस पर सहमत नहीं थे, किंतु मजदूर संघ की उपस्थिति में उन्होंने भी संयुक्त मंचों पर राजनीतिक मुद्दे उठाना छोड़ दिया।

वर्ग–संघर्ष नहीं, समरसता का मंत्र

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, मजदूर संघ ने साम्यवादी नारे "दुनिया के मजदूर एक हो!" की जगह "मजदूरों, विश्व को एक करो!" जैसा समरसता का संदेश दिया। मजदूर संघ ने वैश्विक ट्रेड यूनियन आंदोलनों के साथ सकारात्मक संबंध बनाए रखे हैं। विशेष रूप से, मजदूर संघ को नवम्बर 1991 में विश्व ट्रेड यूनियन महासंघ (WFTU) द्वारा मास्को में आयोजित साम्यवादी सम्मेलन में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस सम्मेलन में श्री प्रभाकर घाटे ने मजदूर संघ की गैर राजनीतिक विचारधारा को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया।

जब अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने विकासशील देशों के साथ व्यापार समझौतों में सामाजिक प्रावधान (social clause) को शामिल करने का प्रस्ताव रखा, जिसका उद्देश्य उन देशों से आयात पर रोक लगाना था जहाँ कथित तौर पर बाल श्रम हो रहा था, मजदूर संघ ने इसका घोर विरोध किया। यह प्रावधान भारत और नेपाल जैसे देशों के निर्यात को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता था। मजदूर संघ प्रतिनिधि श्री आर. वेणुगोपाल ने कई विकासशील देशों को इसके विरुद्ध संगठित किया।

महिला श्रमिकों को सशक्त बनाने हेतु मजदूर संघ ने 1981 के कोलकाता अधिवेशन में महिला विभाग की स्थापना की। अप्रैल 1994 में "सर्व पंथ समादर मंच" का गठन किया गया ताकि भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं में धार्मिक सौहार्द्र को बढ़ावा मिल सके। 1995 में, "पर्यावरण मंच" की स्थापना हुई, जिससे औद्योगिक प्रदूषण और उसके दुष्परिणामों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया गया। इस मंच ने भारतीय जीवन दृष्टि का प्रचार किया कि, "प्रकृति माता को दुहा जाए, दोहा नहीं जाए।"

मजदूर संघ ने 16 अप्रैल, 2001 को दिल्ली के रामलीला मैदान में विशाल रैली आयोजित की जिसमें लाखों मजदूरों ने भाग लिया। इसका उद्देश्य था, डब्ल्यूटीओ (WTO) की नीतियों के अंधानुकरण से होने वाले खतरों को उजागर करना। इस रैली का नारा था, "डब्ल्यूटीओ मोड़ो, तोड़ो या छोड़ो!"

मजदूर संघ ने श्रमिकों को असली पूंजी मानते हुए "उद्योगों का श्रमिकीकरण" की अवधारणा को बढ़ावा दिया। इस मॉडल को कोलकाता के जूट मिलों सहित कई क्षेत्रों में सफलतापूर्वक लागू किया गया। श्रमिकीकरण में तीन तत्व होते हैं – (पूंजी निवेश में हिस्सा, प्रबंधन में भागीदारी) और लाभांश में न्यायोचित हिस्सा। मजदूर संघ ने कहा कि निदेशक मंडल में केवल प्रतीकात्मक भागीदारी पर्याप्त नहीं, श्रमिकों को कंपनी के शेयर आवंटन और लाभ वितरण में प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

वाजपेयी सरकार द्वारा श्री रवींद्र वर्मा की अध्यक्षता में द्वितीय राष्ट्रीय श्रम आयोग का गठन हुआ। वामपंथी ट्रेड यूनियनों ने जहां इस आयोग का बहिष्कार किया, वहीं मजदूर संघ ने श्रमिकों की विविध आवश्यकताओं को लेकर जून 2001 में एक विस्तृत ज्ञापन प्रस्तुत किया। जब आयोग ने आठ प्रमुख मुद्दों पर मजदूर–विरोधी सिफारिशें कीं, तब आयोग के सदस्य और मजदूर संघ प्रतिनिधि श्री सजी नारायणन सी.के. ने एक असहमति पत्र प्रस्तुत किया, जिसे श्रमिक जगत में अत्यधिक सराहा गया। एक मीडिया रिपोर्ट में लिखा गया "इस आयोग की रिपोर्ट से अधिक, मजदूर संघ का असहमति पत्र याद किया जाएगा।"

आधुनिक श्रमिक आंदोलनों का नेतृत्वकर्ता

मजदूर संघ ने 23 नवम्बर 2011 को दिल्ली में ऐतिहासिक रैली आयोजित की, जिसमें लगभग 2

लाख मजदूरों ने भाग लिया, जो हाल के दशकों में अभूतपूर्व शक्ति–प्रदर्शन था। इस रैली में मजदूर संघ ने सतत संघर्ष की घोषणा की। इस प्रदर्शन से प्रेरित होकर अगले ही दिन विभिन्न ट्रेड यूनियनों के नेता मजदूर संघ कार्यालय पहुँचे और संयुक्त आंदोलनों की योजना मजदूर संघ के नेतृत्व में बनाई। इसके बाद 28 मार्च, 2012 और 20–21 फरवरी, 2013 को दो राष्ट्रव्यापी हड़तालें हुईं, जिनमें सभी केंद्रीय ट्रेड यूनियनें मजदूर संघ के नेतृत्व में शामिल हुईं। इन आंदोलनों का सरकार, नियोक्ताओं, मीडिया और श्रमिक–सम्बंधित सभी पक्षों पर व्यापक प्रभाव पड़ा। पहली बार प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने सीधे हस्तक्षेप किया और चार मंत्रियों की एक समिति गठित की गई, जो ट्रेड यूनियनों से वार्ता कर उनकी मांगों का समाधान खोजे। 17 मई, 2013 को दिल्ली में आयोजित भारतीय श्रम सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने सार्वजनिक रूप से ट्रेड यूनियनों की मांगों का उल्लेख किया, जिससे देशभर के मजदूरों में आशा और उत्साह का संचार हुआ।

20–21 जुलाई 2015 को, दो वर्षों के अंतराल के बाद आयोजित 46वां भारतीय श्रम सम्मेलन कठिन श्रम परिस्थितियों में एक ऐतिहासिक मोड़ सिद्ध हुआ। मजदूर संघ प्रतिनिधि की अध्यक्षता में गठित श्रम कानून सुधार समिति में तीनों सामाजिक पक्षों / नियोक्ता संगठन, 11 केंद्रीय ट्रेड यूनियनें, और केंद्र एवं राज्य सरकारों के प्रतिनिधि – ने सर्वसम्मति से श्रम कानूनों के लिए तीन आधारस्तंभ तय किए: 1. श्रमिकों के अधिकार और कल्याण, 2. उद्यमों की स्थिरता और रोजगार सृजन और 3. औद्योगिक शांति

जब चार श्रम संहिताएँ (Labour Codes) मसौदा स्तर पर थीं, तब मजदूर संघ के कार्यकर्ताओं की एक टीम ने सरकार की परामर्श प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी की, जबकि विपक्षी दलों से जुड़े अन्य केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने इसका बहिष्कार किया। मजदूर संघ की सक्रिय भागीदारी के कारण अनेक मजदूर–पक्षीय सुधार, विशेष रूप से श्रमिक लाभों के सार्वभौमिकरण की दिशा में, संहिताओं में शामिल हो पाए। हालांकि कुछ प्रावधान आज भी चिंताजनक हैं। 'वेतन संहिता' और 'सामाजिक सुरक्षा संहिता' को कई दृष्टि से ऐतिहासिक और क्रांतिकारी माना जाता है। फिर भी मजदूर संघ अन्य दो संहिताओं में मौजूद श्रमिक–विरोधी प्रावधानों को संशोधित करवाने के लिए संघर्षरत है।

मजदूर संघ के नेतृत्व में केंद्रीय श्रमिक संगठनों ने 12 सूत्रीय संयुक्त मांग पत्र (जिसे 24 जून, 2014 को अद्यतन किया गया) सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया और 2 सितम्बर, 2015 को राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान किया। इसके प्रत्युत्तर में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली की अध्यक्षता में पाँच मंत्रियों की समिति गठित की, जिसने सभी 11 केंद्रीय श्रमिक संगठनों के साथ 26 और 27 अगस्त, 2015 को व्यापक विचार–विमर्श किया। लंबी बातचीत के पश्चात सरकार ने 12 में से लगभग 10 मांगों को पूरी तरह या आंशिक रूप से स्वीकार कर ऐतिहासिक कदम उठाया। वित्त मंत्री ने ट्रेड यूनियनों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए आश्वस्त किया कि कोई भी श्रम कानून सुधार त्रिपक्षीय परामर्श के बिना नहीं किया जाएगा। सरकार की सक्रिय पहल को देखते हुए मजदूर संघ ने हड़ताल को स्थगित करने का निर्णय लिया। किंतु विपक्षी दलों से संबद्ध केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने अधिकांश मांगों के स्वीकार हो जाने के बावजूद हड़ताल पर जाने का निर्णय बरकरार रखा। मजदूर संघ की अनुपस्थिति के कारण यह हड़ताल प्रभावहीन सिद्ध हुई। यह घटनाक्रम "श्रम कल्याण" और "श्रम राजनीति" के बीच स्पष्ट विभाजन का प्रतीक बना। तब से लेकर अब तक, विपक्ष समर्थित यूनियनें बार–बार राजनीति प्रेरित प्रतीकात्मक हड़तालें आयोजित करती रहीं, जिनका श्रमिक क्षेत्र पर कोई ठोस प्रभाव नहीं पड़ा।

2020–21 के कोविड–19 संकट के दौरान मजदूर संघ ने श्रमिक आंदोलन के इतिहास की सबसे बड़ी सेवा 'पहल' को क्रियान्वित किया। देशभर में

जिला–स्तर पर हेल्पलाइनें स्थापित की गईं और गाँव–गाँव तक सेवा कार्य किए गए। दुर्भाग्यवश, इस प्रक्रिया में मजदूर संघ ने अपने लगभग 600 वरिष्ठ कार्यकर्ता खो दिए, एक अपूरणीय बलिदान जिसे सदा स्मरण किया जाएगा।

ब्रिक्स और एल 20– वैश्विक मंचों पर भारतीय श्रमिक की प्रतिष्ठा

मजदूर संघ ने हाल के वर्षों में वैश्विक नेतृत्व की नई भूमिका निभाई है। 2016 में पहली बार मजदूर संघ ने ब्रिक्स ट्रेड यूनियन फोरम (BRICS TUF) की अध्यक्षता की। भारत में आयोजित सम्मेलन को अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधियों ने संगठन और आतिथ्य के लिए अत्यंत प्रशंसा की। 2021 में कोविड महामारी के दौरान यह सम्मेलन मजदूर संघ की ही अध्यक्षता में ऑनलाइन आयोजित हुआ।

वर्ष 2023 भारत के लिए एक ऐतिहासिक कदम रहा, जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में जी–20 शिखर सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसके अंतर्गत एक प्रमुख खंड 'लेबर 20' (एल 20) का नेतृत्व भारत के सबसे बड़े केंद्रीय श्रमिक संगठन के रूप में मजदूर संघ ने किया। इस सम्मेलन में 209 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जो अब तक की सबसे अधिक प्रतिनिधित्व वाली एल 20 बैठक रही। ब्रिक्स और एल 20 दोनों सम्मेलनों में मजदूर संघ ने श्रम लाभों के सार्वभौमिककरण (अंत्योदय) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसे सभी देशों ने सर्वसम्मति से सराहा और समर्थन दिया।

मई 2025 में भारत–पाक संघर्ष के दौरान मजदूर संघ ने राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा कर रहे सैनिकों के प्रति अडिग समर्थन व्यक्त किया। मजदूर संघ ने यह वचन दिया कि संघर्ष काल के दौरान किसी भी प्रकार का हड़ताल या आंदोलन नहीं किया जाएगा जिससे उत्पादन बाधित हो। बाद में अन्य केंद्रीय ट्रेड यूनियनों ने भी इस उत्तरदायी रुख को अपनाया और अपनी राष्ट्रीय हड़ताल स्थगित की।

अंत्योदय की ओर एक दृढ़ नींव पर निर्मित भविष्य

आज मजदूर संघ लगभग 60 श्रमिक क्षेत्रों में फैले 5,700 से अधिक यूनियनों का समूह है। ये यूनियनें 42 अखिल भारतीय महासंघों में संगठित हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं।

आगामी वर्षों में भारत को दो प्रमुख श्रम चुनौतियों का सामना करना है– 1. असंगठित क्षेत्र का अत्यधिक आकार, 2. संगठित क्षेत्र में ठेका श्रम की बढ़ती प्रवृत्ति।

भारत दुर्भाग्यवश विश्व की सबसे बड़ी असंगठित मजदूर वाला देश है। सरकारी आँकड़ों के अनुसार, देश की 93.7% कामकाजी जनसंख्या श्रम कानूनों और सामाजिक सुरक्षा की परिधि से बाहर है।

2011 के जलगांव अधिवेशन में मजदूर संघ ने असंगठित क्षेत्र को प्रमुख कार्यक्षेत्र घोषित किया और दो अभियानों की घोषणा की– 1. गाँव चलो अभियान और 2. असंगठित को संगठित करो। इसके अंतर्गत मजदूर संघ ने असंगठित श्रमिकों के लिए पृथक विभाग बनाई, जिसे वरिष्ठ कार्यकर्ता और 12 राष्ट्रीय महासंघों द्वारा समन्वित किया गया। इनमें से एक अखिल भारतीय वनवासी ग्रामीण मजदूर महासंघ है, जो भारत के सबसे बड़े आदिवासी श्रमिक संगठनों में से एक है और मध्य प्रदेश एवं समीपवर्ती राज्यों में सक्रिय है।

उत्तर–दक्षिण भारत को एक करने वाले चोल राजाओं का भारत बोध

मीडिया में 27 जुलाई को तमिलनाडु से संबंधित समाचार छाए रहे। कारण था महान चोल सम्राट राजेंद्र प्रथम का जन्म सहस्राब्दी वर्ष। इसके लिए केंद्र सरकार और तमिलनाडु राज्य सरकार ने अपने–अपने ढंग से आयोजन किए। चोल साम्राज्य की राजधानी और यूनेस्को विश्व धरोहर गंगैकोंडचोलपुरम में आयोजित एक विशेष समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शामिल हुए। उन्होंने वहां के शिव मंदिर में पूजा–अर्चना भी की। राजेंद्र चोल की याद में हर साल मनाया जाने वाला यह उत्सव तिरुवथिरई कहलाता है।

चोल राजा की गंगा भक्ति

हालांकि 28 जुलाई एक अन्य कारण से तमिलनाडु को याद करने का एक आनंददायक दिवस भी है। राजेंद्र प्रथम का समय 1014 से 1044 ईस्वी माना जाता हैय अर्थात 11वीं सदी। इससे ठीक तीन सौ साल पहले आठवीं सदी में तमिल धरा पर एक महान स्त्री संत का जन्म हुआ था, जिनका जन्म नक्षत्र उत्सव इस साल 28 जुलाई को मनाया गया। वह थीं बारह तमिल आलवार वैष्णव संतों में एकमात्र महिला संत आन्डाल या गोदा देवी। उनका जन्म मदुरै के पास श्रीविलीपुत्तुर में हुआ था। हालांकि आन्डाल और राजेंद्र चोल में कोई भी समानता नहीं है, सिवाय इस बात के कि दोनों तमिलभाषी थे। किन्तु एक विशेष कारण से मेरे लिए दोनों महत्वपूर्ण बन जाते हैं। दोनों को ही उत्तर भारत में बहने वाली नदियों से लगाव है। आन्डाल के इष्ट हैं – श्रीविलीपुत्तुर में विराजित वटपत्रशायी अर्थात श्री कृष्ण। इसी कारण आन्डाल को यमुना से प्रेम है। अपनी रचना शतिरूपववैश में आन्डाल वृंदावन में यमुना के किनारे रहने वाले कृष्ण को पुकारती हैं। उनकी इच्छा थी वृंदावन की यात्रा करने की। उनके जन्म काल में उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। बाद में महान तमिल दार्शनिक रामानुजाचार्य की धारा के भक्तों ने वृंदावन में एक विशाल गोदा रंगनाथ मंदिर बनवाकर उनकी इस इच्छा को पूरा किया। हालांकि गोदा के जीवन से इस मंदिर के बनने तक कई सदियां बीत गई थीं। वहीं दूसरी ओर राजेंद्र चोल एक राजा के नाते राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं से भरे थे। वह अपने पिता महान चोल सम्राट राजराज प्रथम की तरह एक शिव भक्त भी थे। अपनी उत्तर भारत विजय के संदर्भ में राजेंद्र चोल बंगाल पर आक्रमण करते हैं और गंगा के पवित्र जल को कलश में भरकर अपनी नई राजधानी गंगैकोंडचोलपुरम (ऐसा शहर जिसे गंगा जल लाने के पुण्यस्मरण के तौर पर बनाया गया) में एक सरोवर में स्थापित करते हैं। सरोवर का नामकरण किया जाता है – चोल–गंगा। सम्राट राजेंद्र को कहा जाता है गंगैकोंडचोल– ऐसा सम्राट जिन्होंने गंगा के तट को जीता। राजनीतिक संदर्भ में इस जीत से चोल साम्राज्य के सामरिक शक्ति की जानकारी उत्तर के साम्राज्यों को हुई। इसके दूरगामी सांस्कृतिक प्रभाव भी हुए।

उत्तर और दक्षिण भारत का संबंध

गंगा तट विजय के उपरांत गंगा जल को लाकर चोल साम्राज्य की राजधानी में स्थापित करना राजेंद्र चोल का भारत बोध था। यही भारत बोध आन्डाल को यमुना का प्रेमी बनाता है। इस संदर्भ में हम तमिल वैष्णव संत आलवारों द्वारा रचित शदिव्य प्रबंधमश का उदाहरण ले सकते हैं। इस ग्रंथ में विष्णु से संबंधित एक सौ आठ दिव्य प्रदेशों का वर्णन है। करीब 1200 सौ साल पुरानी इस पुस्तक में तमिल संत उत्तर भारत के बद्रीनाथ, वृंदावन, देव प्रयाग, मुक्तिनाथ (वर्तमान नेपाल), अयोध्या और नैमिषारण्य का जिक्र करते हैं। उत्तर भारत के इन वर्तमान स्थानों से तमिलनाडु के किसी भी शहर की दूरी एक हजार किलोमीटर से अधिक होगी। किन्तु आज से एक हजार साल पहले भी उत्तर के इन स्थानों के प्रति उनका लगाव ही भारत बोध है। यह भारत बोध ही काशी को तमिल, मलयाली, तेलेगु और कन्नड भाषी भक्तों के लिए महातीर्थ बनाता है। काशी के विश्वनाथ मंदिर की कई रस्मों को निभाने वाले जंगमबाड़ी मठ की परंपरा उत्तर भारतीय न होकर कर्नाटक की है। इसी प्रकार काशी के प्रसिद्ध गौरीकेदारेश्वर मंदिर

में पूजा–पाठ की संपूर्ण विधि तमिल शैव परंपरा से होती आई है। इन स्थानों में बिना किसी भाषाई भेद के सभी समुदायों का जो नैसर्गिक अपनत्व है, वही भारत बोध है। आज से कुछ साल पहले जिस काशी तमिल संगम की स्थापना की गई थी, उसके पीछे यही कारण थे। उत्तर की काशी और तमिल शैव परंपरा अविछेद्य है। इसी प्रकार दक्षिण के रामेश्वरम के साथ उत्तर का संबंध हजारों साल पुराना है। महाराष्ट्र के संत एकनाथ की रामेश्वरम यात्रा तो प्रसिद्ध ही है।

चोल राजाओं के उत्तर भारत अभियान के संदर्भ में कुछ ऐतिहासिक तथ्यों का स्मरण भारत बोध के संदर्भ में करना उचित होगा। तमिल नगर कुंभकोणम के नागेश्वर मंदिर में एक पालवंशीय गणेश की प्रतिमा पूजित हो रही है। इतिहासकार नागस्वामी के अनुसार यह प्रतिमा राजेंद्र चोल अपनी बंगाल विजय के बाद वहां से ले आए थे। ध्यान देने वाली बात यह है कि एक विजेता राजा अपने विजय अभियान के बाद विजित प्रदेश से देवता लेकर अपने प्रदेश के मंदिर में भाव भक्ति से प्रतिष्ठा करता है। राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के बावजूद दो भिन्न प्रदेश आध्यात्मिक डोर से आपस में बंधे हुए दिखते हैं यही कारण है कि एक ही देवता दो भिन्न प्रदेशों में, जो राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी हैं, द्वारा पूजित होते हैं। इतिहासकार मीनाक्षी जैन, नागस्वामी के हवाले से कहती हैं कि कुलोतुंग चोल प्रथम (1070–1122 ई.) के समय बंगाल से पाल साम्राज्य के समय बनी हुई नटराज शिव की एक मूर्ति लाई गई,जिसे तमिलनाडु के मेलकदंबूर शिव मंदिर में उत्सव मूर्ति के तौर पर स्थापित किया गया। जैन के मुताबिक यह मूर्ति युद्ध के समय नहीं लाई गई थी, बल्कि कुलोतुंग चोल प्रथम के बंगाली राजगुरु अपने निजी पूजा के लिए उस मूर्ति को लाए थे। आज भी इस मंदिर में बंगाल के नटराज शिव की पूजा धूमधाम से हो रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज के बंगाल में शैव परंपरा विलुप्त प्राय है, किन्तु तमिलनाडु में यह परंपरा न केवल जीवित है बल्कि वहां के सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग है। राजनीतिक अभियान के बाद अन्य प्रदेश से देव विग्रहों को अपने प्रदेश में लाकर प्रतिष्ठित करना, इन शासकों का भारत बोध ही था।

चोल राजाओं की राजनीतिक महत्वाकांक्षा भारत को राजाओं और उनके राजनीतिक सीमाओं के नजरिए से देखना भारी भूल होगी। भारत राष्ट्र आन्डाल के गीतों, नामदेव के अभंगों (नामदेव के पद तो गुरु ग्रंथ साहब में संकलित किए गए हैं) और लाल देद या लल्लेश्वरी के वचनों से बनता है। यहां की राज शक्ति भी इसी परंपरा का हिस्सा रहा है। यही कारण है कि राजनीतिक सीमाओं के बावजूद आदि शंकर से लेकर गुरु नानक तक भारतवर्ष की यात्राएं करते हैं। किन्तु किसी भी राजनीतिक सीमा पर उन्हें रोका नहीं गया। यूरोप और मध्य पूर्वी देशों में ऐसा होना अति दुर्लभ ही है। मध्यकाल में यूरोप में एक धर्म ईसाइयत के होते हुए भी आपस में लड़ता रहा। वहीं भारत के राजा आपस में लड़ते हुए भी यहां के मूल सूत्र एकात्मता का संदेश देते रहे। महान चोल राजाओं के उत्तर भारत विजय को हमें केवल राजनीतिक दृष्टि से देखने की भूल नहीं करनी चाहिए बल्कि यह चोल सम्राटों के गंगा के प्रति भाव को भी दिखाता है। अन्यथा एक पराजित प्रदेश की नदी का जल उनके लिए इतना महत्वपूर्ण और पवित्र कदापि नहीं होता कि वह अपने राजधानी के सरोवर का नामकरण ही उस नदी के नाम पर कर दे। इस राजनीतिक अभियान से चोल राजा बंगाली शैव साधकों के संस्पर्श में आते हैं, जिसका प्रभाव तमिलनाडु के शैव सिद्धांत में दिखता है। चोल राजाओं को भारत के इस अविच्छिन्न परंपरा के बाहर देखने से बड़ी भूल होने की संभावना है। अपने राजनीतिक महत्वाकांक्षा के बावजूद चोल शासकों ने कभी भी धार्मिक प्रतीकों पर हमला नहीं किया बल्कि जब भी मौका मिला अन्य प्रदेशों के देवताओं को अपने प्रदेश में विधि विधान से स्थापित किया और उन प्रदेशों के आध्यात्मिक परंपरा से भी स्वयं को जोड़ लिया। आज आवश्यकता है भारत के इस वीर सपूत को केवल आंचलिक दृष्टि से न देखकर भारतीयता के आत्मा के एक मुख्य तत्व के रूप में देखना होगा।

चोल कौन थे?

चोल राजवंश ने करीब 300 ईसा पूर्व से 1279 ईस्वी तक शासन किया था। इन्हें मध्ययुगीन दक्षिणी भारत में सबसे शक्तिशाली तमिल साम्राज्यों में से एक माना जाता था। नेशनल ज्योग्राफिक की जनवरी, 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 1,500 वर्षों तक चोल राजाओं ने मजबूत समुद्री व्यापार नेटवर्क के जरिए दक्षिण व दक्षिण–पूर्व एशिया में धर्म, संस्कृति और वास्तुकला को प्रभावित किया। उनका प्रभाव चीन समेत कई क्षेत्रों तक फैला था।

अपने चरम काल में चोल साम्राज्य कला, साहित्य, शिक्षा एवं शहरी नियोजन के लिए प्रसिद्ध था। चोल राजाओं ने बड़े पैमाने पर मंदिरों का निर्माण कराया, जो धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र थे। उन्होंने सूखे से निपटने और स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए झीलें बनवाईं।

सम्राट राजेंद्र चोल प्रथम (1014–1044 ई.) को भारत के इतिहास के सबसे शक्तिशाली और दूरदर्शी शासकों में से एक माना जाता है। उनके नेतृत्व में चोल साम्राज्य ने दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशिया तक अपना प्रभाव बढ़ाया था। राजा ने राजधानी में भव्य मंदिर का निर्माण कराया, जो 250 वर्षों से भी अधिक समय तक शैव भक्ति, अद्भुत चोल वास्तुकला और प्रशासनिक कौशल का प्रतीक रहे। ये मंदिर अपनी जटिल मूर्तियों, कांस्य प्रतिमाओं और प्राचीन शिलालेखों के लिए प्रसिद्ध हैं। इसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है।

चोल सम्राट राजेंद्र प्रथम की नौसेना इतनी मजबूत थी कि उन्होंने पूरे उपमहाद्वीप के इतिहास की दिशा बदल दी थी। इंडोनेशिया में श्रीविजय वंश के राजा विजयतुंगवर्मन पर उन्होंने समुद्र तटों से एक साथ 14 जगहों से गुप्त हमला किया था। उनके पास इतनी बड़ी–बड़ी नाव मौजूद थीं कि उनमें हाथी और भारी पत्थर दूर तक फेंकने वाली मशीनें रखी जा सकती थीं। इस हमले में चोल सम्राट ने राजा विजयतुंगवर्मन की सेना को आसानी से हरा दिया और राजा को बंदी बना लिया। बाद में राजा ने अपनी बेटी की शादी करके समुद्री कारोबार में उनकी अधीनता स्वीकार की।

आदि तिरुवथिरई महोत्सव का उद्देश्य

आदि तिरुवथिरई महोत्सव को 23 से 27 जुलाई तक राजेन्द्र प्रथम की दक्षिण–पूर्व एशिया की ऐतिहासिक समुद्री विजय यात्रा की 1000वीं वर्षगांठ और तमिल शैव भक्ति परंपरा के सम्मान में आयोजित किया गया था। इसे चोल राजाओं ने आगे बढ़ाया और 63 नयनमारों (तमिल शैव धर्म के संत–कवियों) ने अमर कर दिया था। इस महोत्सव का मुख्य उद्देश्य शैव धर्म, मंदिर वास्तुकला, साहित्य व शास्त्रीय कलाओं को बढ़ावा देने में राजेंद्र चोल प्रथम और चोल राजवंश की असाधारण विरासत का जश्न मनाना था। इसका एक उद्देश्य शैव सिद्धांत की गहन दार्शनिक जड़ों व इसके प्रसार में तमिल की भूमिका को सामने लाना और तमिल संस्कृति में नयनमारों के योगदान को सम्मानित करना भी था।

'संगठित एवं सशक्त हिन्दू ही समाज विखण्डन के षड्यन्त्रों का एकमेव समाधान'–

विहिप

हिन्दू समाज मानव कल्याण के ईश्वर प्रदत्त पुनीत कार्य में सतत् कार्यरत रहा है। अनेक आसुरी शक्तियाँ इसको विखण्डित करती रही हैं। वर्तमान में इनकी गति और अधिक तीव्र हो गई है। जाति, भाषा, प्रान्त, क्षेत्र, लिंग, पूजा–पद्धति, परम्परा, रीति–नीति तथा आचार–विचार के नाम पर हमारी सामाजिक एकता को विविध प्रकार से तोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। हिन्दू को हिन्दू के ही विरुद्ध खड़ा किया जा रहा है। जातीय दुराग्रह के आधार पर समाज को विभाजित करने तथा भारत उद्भूत धार्मिक एवं पांथिक व्यवस्थाओं में परस्पर अविश्वास निर्माण करने के षड़यन्त्र एवं धर्मांतरण का सुनियोजित कुचक्र, हिन्दू प्रतीकों, पूज्य संतों, परम्पराओं एवं त्यौहारों के प्रति अश्रद्धा निर्माण करना, हिन्दू पहचान को मिटाने के प्रयास तथा हिन्दू युवा और महिला शक्ति के मन में अपनी ही परम्परा के प्रति आत्महीनता उत्पन्न कर उन्हें उनके मूल से काटना ही इनका उद्देश्य है। इन विघटनकारी प्रवृत्तियों के पीछे विस्तारवादी चर्च, कट्टरपंथी इस्लाम, मार्क्सवाद, धर्मनिरपेक्षतावादी तथा बाजारवादी शक्तियां तीव्रगति से सक्रिय हैं। इसके लिए विदेशी वित्त पोषित, तथाकथित प्रगतिशीलतावादी, धर्मांतरणकारी शक्तियां और भारत विरोधी वैश्विक समूह भी सक्रिय हैं। इनका अन्तिम लक्ष्य हिन्दू समाज को तोड़ना और भारत की जड़ों पर प्रहार करना है।

विश्व हिन्दू परिषद की प्रबंध समिति का यह मत है कि इन षड़यन्त्रों के बावजूद भी हिन्दू जागरण प्रारम्भ हो चुका है। विधर्मियों की अनवरत कुचेष्टाओं का उत्तर देते हुए देश के कोने–कोने से हिन्दू समाज पुनः अपने धर्म, परम्परा, संस्कृति और मूल की ओर लौट रहा है। महाकुम्भ, कांवड़ यात्राएं, श्री अमरनाथ यात्रा, श्री राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण के सभी चरणों में समाज की सहभागिता, गौरक्षा आन्दोलनों, विभिन्न धार्मिक आयोजनों, तीर्थों तथा मन्दिरों में हिन्दू समाज के विराट स्वरूप का प्रकटीकरण हो रहा है। राष्ट्रीय एवं हिन्दू जीवन मूल्यों से जुड़े साहित्य, कला, संगीत आदि के प्रति बढ़ता हुआ आकर्षण, हिन्दू नायकों के प्रति बढ़ती श्रद्धा एवं आक्रान्ताओं के प्रति बढ़ता आक्रोश, ये सब हिन्दू जागरण के ही प्रकट लक्षण हैं।

विश्व हिन्दू परिषद सभी कार्यकर्ताओं, पूज्य संतों, सामाजिक, धार्मिक संगठनों, मातृशक्ति तथा समस्त हिन्दू समाज का आह्वान करती है कि वे विखण्डनवादी शक्तियों को पहचानें। अपने अन्तर्निहित भेदभावों को जड़मूल से समाप्त करें। सरकारें नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में समाविष्ट करें। प्रत्येक हिन्दू जाग्रत एवं संगठित होकर समाज विरोधी शक्तियों का प्रभावी प्रतिकार करे, तभी हमें न कोई तोड़ सकेगा और न ही मिटा सकेगा।

(विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय प्रबंध समिति में पारित प्रस्ताव)

सभी के सुख की कामना करना ही मूलभूत हिन्दू विचार – शांताक्का जी

राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका शांताक्का जी ने कहा कि "सम्पूर्ण विश्व के हित की चिंता करते हुए, सभी के सुख की कामना करना यही मूलभूत हिन्दू विचार है। भारत का श्रेष्ठ इतिहास और परम्परा इसी बात की द्योतक है"। सेविका समिति की अखिल भारतीय कार्यकारिणी एवं प्रतिनिधि मंडल की अर्धवार्षिक बैठक के समारोप सत्र में उन्होंने कहा कि इसी चिंतन के आधार पर हमें स्व–बोध के प्रकाश में अपने जीवन को गढ़ना है।

अगले वर्ष 2026 में राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना के 90 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस उपलक्ष्य में प्रतिनिधि सभा में कार्यवृद्धि की योजना बनायी गयी। साथ ही यह निश्चित किया गया कि इस वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित सभी कार्यक्रमों में राष्ट्र सेविका समिति की सेविकाएं पूर्ण उत्साह के साथ सम्मिलित होंगी। समिति के विभिन्न कार्य विभागों द्वारा संघ शताब्दी के अवसर पर आगामी एक वर्ष तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

प्रतिनिधि सभा में "युवा वर्ग में बढ़ती नशे की लत – एक गंभीर संकट" विषय पर प्रस्ताव पारित किया गया। प्रतिनिधि सभा ने आह्वान किया कि सरकार एवं शैक्षणिक तथा सामाजिक संस्थाएं अपनी योजनाओं में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करें। साथ ही "ऑपरेशन सिंदूर" को सफलतापूर्वक संचालित करने पर भारतीय सेना और सरकार को अभिनन्दन पत्र दिया गया। प्रतिनिधि सभा के दूसरे दिन "स्वर निनाद" घोष पर आधारित पुस्तिका का विमोचन प्रमुख संचालिका शांताक्का जी के कर–कमलों से किया गया। 'भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का काला अध्याय – आपातकाल' विषय पर सेविकाओं के अनुभवों पर आधारित "आपातकाल की स्मरणकणिका" नामक ई–पत्रिका का विमोचन भी किया गया।

अखिल भारतीय कार्यकारिणी और राष्ट्र सेविका समिति के प्रतिनिधियों की यह बैठक 17 से 20 जुलाई, 2025 के बीच रेशीमबाग, स्मृति मंदिर, नागपुर में आयोजित हुई। बैठक में 38 प्रांतों से 411 प्रतिनिधि उपस्थित रहीं।

संघ के वरिष्ठ प्रचारक नवल जी नहीं रहें

संघ के वरिष्ठ प्रचारक नवल प्रसाद जी का 6 जुलाई की देर रात्रि में निधन हो गया। नवल जी जागरण पत्रक के प्रांत के पाठक प्रमुख थे। नवल जी मूलतः नालंदा जिला के अस्थावां प्रखंड के अकबरपुर ग्राम के निवासी थे। पटना विश्वविद्यालय से आपने स्नातकोत्तर (भूगोल) तक की आपने पढ़ाई की थी। पढ़ाई के उपरांत इनकी नौकरी बतौर शिक्षक लगी थी। लेकिन उसे दरकिनार कर आप 1996 में भागलपुर संघ शिक्षा वर्ग गए। वहीं से प्रचारक बने और अपना जीवन राष्ट्र कार्य के लिए समर्पित कर दिया।

संघ के प्रचारक के तौर पर सर्वप्रथम आप सासाराम में नगर प्रचारक बने। इसके बाद बांका एवं नालंदा के जिला प्रचारक के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। ग्रामीण क्षेत्रों में संघ कार्य के विस्तार में आपकी अहम भूमिका थी। ग्रामीण क्षेत्र में सक्रिय गतिविधि के कारण आपको अखिल भारतीय किसान संघ के प्रांत के सह संगठन मंत्री का दायित्व दिया गया। किसान संघ के कई प्रमुख अभियान और कार्यक्रम आपके सफल नेतृत्व में सम्पन्न हुए। अक्खड़ स्वभाव के धनी नवल जी अक्सर अपने कार्य में रमे रहते थे। एक बार कार्यक्रम तय हो जाने के बाद नवल जी पीछे नहीं हटते।

नवल जी की कथनी करनी एक थी। इस कारण से स्वयंसेवकों के बीच काफी लोकप्रिय थे। आपके पिताजी स्व तृप्ति नारायण जी कृषक थे। नवल जी 5 भाई और 1 बहन थे। आपके 3 भाई सरकारी सेवा में थे। सबसे छोटे भाई कौशलेंद्र प्रसाद सिंह का निजी विद्यालय है। नवल जी लंबे समय से बीमार थे। उन्होंने अन्तिम सांस पटना के एक निजी अस्पताल में ली। अन्तिम संस्कार पटना के गुलबी घाट पर हुआ। मुखाग्नि छोटे भाई कौशलेंद्र प्रसाद सिंह ने दी।

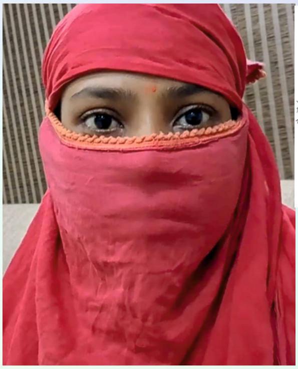

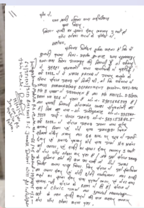

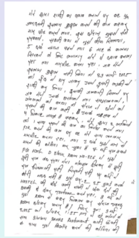

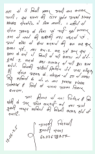

एमबीबीएस डॉक्टर हिन्दू प्रेमिका को टुकड़ों–टुकड़ों में काटेगा

पटना के प्रसिद्ध नालंदा मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल के पीजी के छात्र मोहम्मद सेराज अहमद ने एक हिंदू लड़की को फाँसा और अब उसे धमकी दे रहा है कि यदि उसने किसी के सामने मुंह खोला और शादी के लिए दबाव बनाया तो उसका हाल श्रद्धा से भी बुरा किया जाएगा। श्रद्धा को तो 25 टुकड़ों में ही काटा गया था लेकिन उसे इससे अधिक टुकड़ों में काटा जाएगा। पीड़ित लड़की का दावा है कि इस मेडिकल के छात्र के मोबाइल में 50 से अधिक हिंदू लड़कियों के नंबर हैं, जिन्हें वह अपने टारगेट में रखे हुए है। इन लड़कियों के फोटो और वीडियो भी उसके मोबाइल में है।

राजधानी के महिला थाने में एक युवती ने एनएमसीएच में अध्ययनरत पीजी के छात्र पर लव जिहाद और हत्या की कोशिश करने की प्राथमिकी दर्ज कराई है। युवती का नाम रचना है और वह भागलपुर की रहनेवाली है। एएनएम प्रशिक्षित रचना के अनुसार तीन वर्ष पूर्व वह नौकरी की तलाश में पटना आई थी। यहाँ आने पर वह एनएमसीएच में इलाज कराने के लिए चली गई। यहाँ उसकी भेंट गोपालगंज के रहनेवाले मो. सेराज से हुई। मुलाकात के समय उसने अपना नाम सोनू बताया था। सोनू का व्यवहार उसे काफी अच्छा लगा। धीरे धीरे उसने इससे नजदीकी बढ़ा ली। सेराज उसके साथ पटना के अगमकुआँ स्थित शीतला माता मंदिर जाता था। उसने स्वयं को हिन्दू साबित करने के लिए छठ घाट पर जाकर अर्घ्य भी दिया। प्रसाद खाकर कहा कि यह छठ तुम्हारे लिए किया हूं। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं। उसने शादी का झांसा देकर प्रेम संबंध बनाए। लेकिन एक दिन युवती को लड़के की सच्चाई का पता चल गया। उसने कहा कि झूठ बोलकर प्रेम संबंध क्यों बनाया तो लड़के ने कहा कि वह प्रेम के लिए नहीं मानती, इसलिए खुद को हिन्दू बताया था।

इसके बाद वह उसके साथ रहने लगा। जब उसने शादी का, दबाव बनाया तो जबरदस्ती इस्लाम कुबुल करने की बात कहकर मारपीट करने लगा। सब्जीबाग में ले जाकर बीफ भी खिलाया। पांच दफे नमाज पढ़ने और कलमा सीखने का दबाव देने लगा। जब उसने इस्लाम नहीं स्वीकारा तो इस साल ईद में उसने दूसरी लड़की से निकाह कर लिया। युवती ने कहा कि जब उसको निकाह की जानकारी मिली तो लड़के के घर पहुंच गई। लेकिन वहां उसके साथ परिवार वालों ने मारपीट की और कहा कि उनके धर्म में दो शादियां जायज है। युवती ने कहा कि लड़का उसका अपहरण कराने की कोशिश कर रहा है। वह डर से इधर–उधर रह रही है। मो. सेराज उसे श्रद्धा से भी बुरा हाल बना देने की लगातार धमकी दे रहा है।

पांच दिनों तक महिला थाने में प्राथमिकी दर्ज नहीं हुई। युवती ने कहा कि वह प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए 14 जून को महिला थाने पहुंची थी। लेकिन प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए थाने की पुलिस पांच दिनों तक एक थाना से दूसरे थाने में भटकाते रही। 19 जून को डीजीपी जनता दरबार में गई तो महिला थाने में बलात्कार, धोखा और अपहरण की धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई है। उसने कहा कि उसके साथ लव जिहाद किया गया है, इसके बाद भी कोई धारा नहीं जोड़ा गया है।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/23-25

स्वच्छता की पहल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सेवा सहयोग की पहल पर निर्मल वारी के लिए कुल 3600 मोबाइल शौचालयों का उपयोग किया जा रहा है। हरिशयन एकादशी के दिन पंढरपुर में अतिरिक्त दो हजार शौचालय स्थापित किए गए हैं। विशेष बात यह कि पंढरपुर के स्थानीय प्रशासन ने 26 हजार सार्वजनिक शौचालय उपलब्ध कराए। पिछले 10 वर्षों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सेवा सहयोग संस्था के कार्यकर्ताओं ने स्वच्छता यज्ञ को लगातार जारी रखा है। जिससे वारी मार्ग के गांवों में गंदगी में 80 प्रतिशत तक की कमी आई है।

आषाढ़ी एकादशी के अवसर पर हर साल लाखों वारकरी डिंडी (पालकी) पैदल पंढरपुर जाते हैं। पालकी के पड़ाव पर सुविधाओं के अभाव में वारकरियों को खुले में शौच करना पड़ता था, जिससे गंदगी फैलती थी। इस समस्या का समाधान करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सेवा सहयोग संस्था ने पहल की और निर्मल वारी की शुरुआत की।

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक परंपरा वाली यह वारी सकुशल संपन्न हो, पर्यावरण की रक्षा हो और जिन गांवों से वारी गुजरती है, वहां बीमारियां न फैलें, इसके लिए 2015 से निर्मल वारी अभियान चलाया जा रहा है। सैकड़ों वर्षों से अनेक उतार–चढ़ाव देखते हुए वारकरी पंढरपुर की वारी नियमित रूप से करते आ रहे हैं। आधुनिक काल में अब वारी सही मायने में भौतिक रूप से निर्मल हो गई है।

निर्मल वारी के मुख्य संयोजक संदीप जाधव बताते हैं – "संतश्रेष्ठ ज्ञानेश्वर महाराज, जगद्गुरु संत तुकाराम महाराज, निवृत्तिनाथ महाराज, सोपानकाका की पालकियों के साथ राज्य सरकार ने मोबाइल शौचालय उपलब्ध कराए हैं। उनके प्रबंधन, स्वच्छता, उपयोग का नियोजन, साथ ही वारकरियों के प्रबोधन का नियोजन सेवा सहयोग और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक गत 10 वर्षों से कर रहे हैं। वारी की यात्रा को स्वच्छ और निर्मल बनाने के लिए स्वयंसेवकों ने आगे आकर यह अभियान शुरू किया। जिसे अब राज्य सरकार और समाज की विभिन्न संस्थाओं का बड़ा साथ मिल रहा है। हर साल वारी अधिक स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्धक होती जा रही है। पालकी पड़ावों पर फैलने वाली बीमारियां लगभग खत्म हो गई हैं।"

जाधव ने बताया कि पिछले 10 साल में वारी में खुले में शौच करने का प्रमाण 80 प्रतिशत तक घट गया है। नियमित वारी करने वाले वारकरी शौचालयों का उपयोग कर रहे हैं, और डिंडी चालक तथा स्थानीय नागरिकों द्वारा भी शौचालयों के उपयोग पर जोर दिया जा रहा है, जिसे वारकरियों का भी सकारात्मक प्रतिसाद मिल रहा है।

हजारों कार्यकर्ता

चारों संतों के पालकी समारोह में शुरू से ही निर्मल वारी के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सेवा सहयोग के हजारों कार्यकर्ता कार्यरत हैं। 27 कार्यकर्ता पालकी के दौरान पूर्णकालिक रूप से नियोजन कर रहे हैं। निर्मल वारी के मुख्य संयोजक जाधव के साथ संतोष दाभाडे, सह–संयोजक अविनाश भेगडे, समेत कई कार्यकर्ता नियमित सक्रिय रहते हैं। प्रत्येक पड़ाव पर रा. स्व. संघ के महाविद्यालयीन विभाग के स्वयंसेवक और समाज के कार्यकर्ता 50 से 60 की संख्या में व्यवस्था के लिए हैं। वहां पानी, बिजली, स्वच्छता आदि व्यवस्थागत कार्य और वारकरियों को जागरूक करने का कार्य किया जाता हैं।

डाक टिकट

पता